इरेना सेंडलर

और वारसॉ यहूदी बस्ती के बच्चे

सुसान गोल्डमैन रुबिन

चित्र: बिल फ़ार्नस्वर्थ

बहुत कम लोग पोलिश सामाजिक कार्यकर्ता इरेना सेंडलर के बारे में जानते हैं, जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वारसॉ यहूदी बस्ती से लगभग चार सौ बच्चों को बाहर निकालने में मदद की थी. अपने पेशेवर कौशल और कनेक्शनस के साथ-साथ औज़ारों के बक्सों, एम्बुलेंस और अन्य सरल चीज़ों का उपयोग करके, इरेना सेंडलर ने नाजियों को ललकारा और यहूदी बच्चों को बचाने में अपनी जान जोखिम में डाली. बच्चों के नामों की वास्तविक पहचान वाली उनकी गुप्त सूची युद्धग्रस्त वारसॉ में एक पेड़ के नीचे कांच के दो मर्तबानों में छिपाकर सुरक्षित रखी गई थी. इस प्रेरक जीवनी में सेंडलर के साहस और करुणा की कहानी को बेहतरीन शब्दों में और शानदार तैल चित्रों के साथ बताया गया है.

इरेना सेंडलर

और वारसॉ यहूदी बस्ती के बच्चे

सुसान गोल्डमैन रुबिन
चित्र: बिल फ़ार्नस्वर्थ

"मुझे मेरे पिता ने सिखाया था कि जब कोई डूब रहा हो तो तुम उससे यह मत पूछो कि वो तैर सकता है, या नहीं. तुम बस पानी में कूदो और उसकी मदद करो."

इरेना सेंडलर

सितंबर 1, 1939 की सुबह-सुबह, इरेना सेंडलर और उनकी माँ अपने वारसॉ अपार्टमेंट में बैठी रेडियो सुन रही थीं. खबर चिंताजनक थी. इरेना ने कहा, "खबर है कि जर्मन सेना ने सुबह पोलिश सीमा पार कर ली है." वास्तव में, द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया था.

युद्ध के पहले हफ्तों तक जर्मन विमानों ने वारसॉ, पोलैंड पर दिन-ब-दिन, रात-दर-रात बमबारी की. उससे इमारतों में आग लग गई और वे जल उठीं. भयभीत लोग सुरक्षा के लिए इधर-उधर भागने लगे.

एक युवा कैथोलिक सामाजिक कार्यकर्ता इरेना सेंडलर ने घायलों की देखभाल करने और जरूरतमंदों तक खाना पहुंचाने की पूरी कोशिश की. लेकिन बहुत अधिक शरणार्थी, अपने शहरों को छोड़कर अब वारसॉ में आ रहे थे क्योंकि जर्मनों ने अपना हमला जारी रखा था. 28 सितंबर, 1939 को पोलैंड ने आत्मसमर्पण कर दिया. 1 अक्टूबर को जर्मन सैनिकों ने वारसॉ में प्रवेश किया. उसके बाद वॉरसॉ शहर और पोलैंड का अधिकांश भाग नाज़ी शासन के अधीन आ गया.

उसके बाद इरेना तुरंत पोलिश सोशलिस्ट पार्टी के प्रतिरोध आंदोलन में शामिल हो गईं. उन्होंने कहा, "उस समय, अपनी सबसे भरोसेमंद महिला मित्र के साथ, मैंने उन लोगों को बचाने के लिए एक विशेष दल का गठन किया जो सबसे अधिक खतरे में थे." इरेना और उनके दोस्तों ने, पोलिश नागरिकों के नाम से सैकड़ों झूठे दस्तावेज़ बनवाकर यहूदियों को भूख से मरने से बचाया. इस तरह वो समूह वारसॉ में समाज कल्याण विभाग से वित्तीय सहायता का हकदार बन गया.

हालाँकि जर्मनों ने किसी को भी यहूदियों की मदद करने से मना किया था, इरेना ने उनके आदेशों की अवहेलना की. यहूदियों की सहायता करना उसके लिए कोई नई बात नहीं थी. वारसॉ विश्वविद्यालय में अपने छात्र दिनों में, इरेना ने तब विरोध किया था जब यहूदी छात्रों को "यहूदी घेट्टो बेंच" पर अलग बैठने के लिए मजबूर किया गया था. "मैं हमेशा यहूदियों के साथ बैठती थी," उन्होंने कहा, "और उन्हें अपनी एकजुटता दिखाती थी."

फिर इरेना को वारसॉ के यहूदी क्वार्टर, जिसे यहूदी बस्ती, यानि घेट्टो के नाम से जाना जाता है, में अपने यहूदी दोस्तों की चिंता होने लगी. वहाँ पहले से ही भीड़भाड़ थी, लेकिन जर्मनों ने फिर भी ग्रामीण इलाकों से आए हजारों यहूदियों को उस यहूदी बस्ती में ठूंस दिया था.

मई 1940 में जर्मनी ने, बमबारी वाली इमारतों की ईंटों का उपयोग करके यहूदी बस्ती के चारों ओर, यहूदियों को एक दीवार बनाने के लिए मजबूर किया. नवंबर 1940 तक दीवार 11.5 फीट ऊंची उठ गई थी, और उसके शीर्ष पर कांच के टुकड़े और कंटीले तार लगे थे. वारसॉ के शेष भाग में, दरवाज़ों पर सशस्त्र पुलिस का पहरा था. यहूदियों को यहूदी बस्ती छोड़ने से मना किया गया था, और पुलिस ने किसी भी यहूदी को बचाते हुए पकड़े जाने पर गोली मारने के आदेश दिए थे. यहूदी घेट्टो में, भयानक भीड़भाड़ और गंदगी के कारण टाइफस की महामारी फैल गई, "जर्मन किसी भी महामारी से डरते थे," इरेना ने कहा. "इसलिए, उन्होंने पोलिश अधिकारियों को यहूदी बस्ती में स्वास्थ्य और स्वच्छता की देखभाल करने की अनुमति दी. हमें यहूदी बस्ती में प्रवेश करने की अनुमति देने वाले पास, वारसॉ रोग नियंत्रण विभाग ने दिए." इरेना और उसकी सहेलियाँ नर्सों की वेशभूषा में, सफ़ेद वर्दी और सफ़ेद टोपियाँ पहनकर यहूदी बस्ती में दाखिल हुईं. अपनी सहानुभूति दिखाने के लिए, इरेना ने डेविड के स्टार वाला एक आर्मबैंड पहना, ठीक वैसे ही जैसे यहूदियों को पहनने का आदेश दिया गया था.

अंदर, इरेना ने जो देखा उसे देखकर वो भयभीत हो गई. उन्होंने कहा, "बूढ़े और जवान सड़कों पर मर रहे थे." फटे कपड़े पहने, नंगे पाँव यहूदी बच्चे, रोटी और पैसों की भीख माँग रहे थे और दरवाज़ों पर सोते थे.

1942 की जुलाई में नाजियों ने यहूदी बस्ती को खाली करना शुरू कर दिया. जर्मन, यहूदी बच्चों और वयस्कों को मवेशी-कारों में भरकर ट्रेब्लिंका, एक मृत्यु शिविर में ले गए. वहां पर नाज़ी उन यहूदियों को मार देते जो पहले से ही बीमारी और भुखमरी से नहीं मरे थे.

इरेना ने कहा, "यहूदी बस्ती से बच्चों को आर्य (गैर-यहूदी) इलाके में ले जाने की व्यवस्था करना मेरी एक परम आवश्यकता बन गई."

लेकिन वो ऐसा कैसे कर सकती थीं?
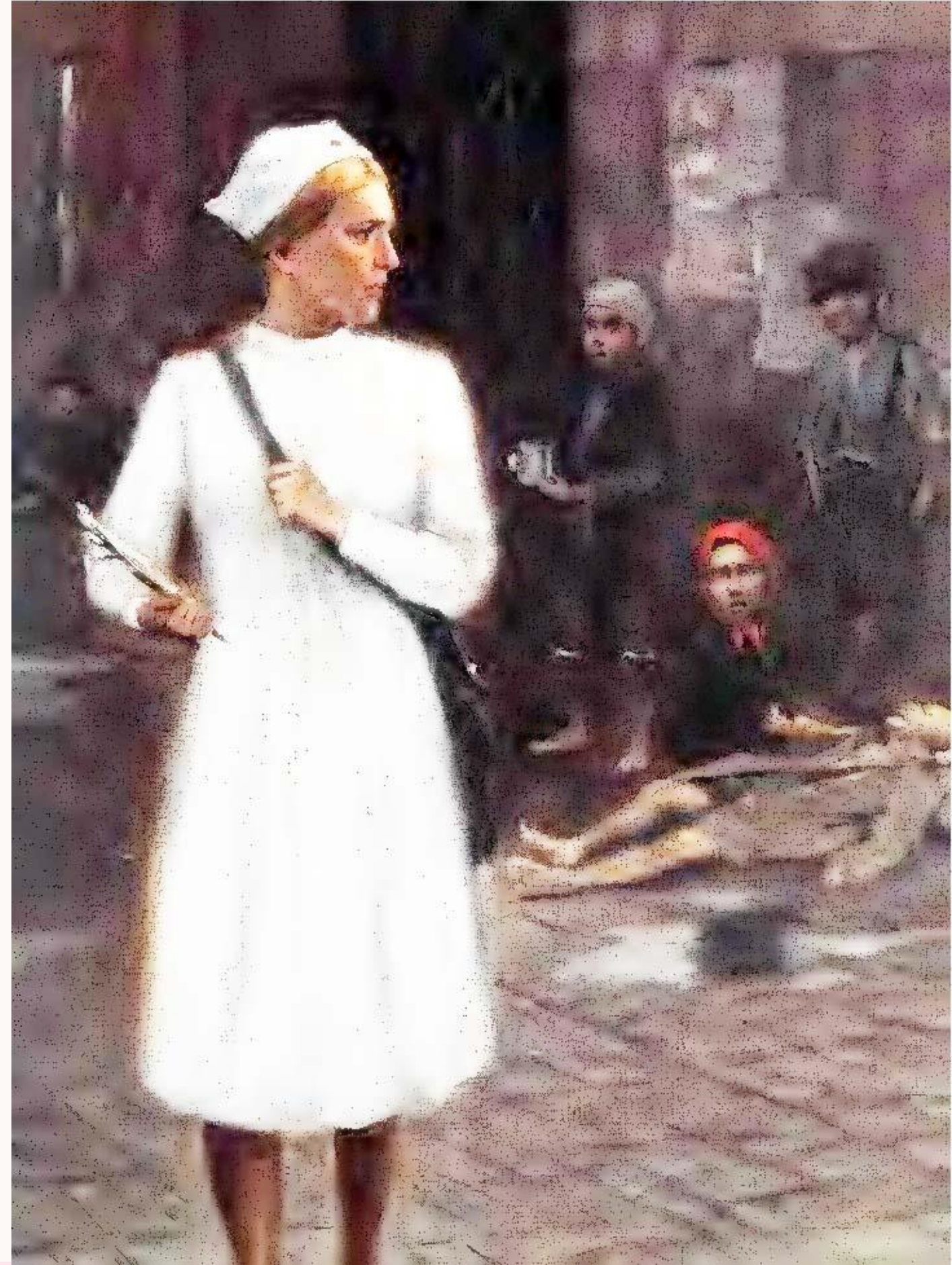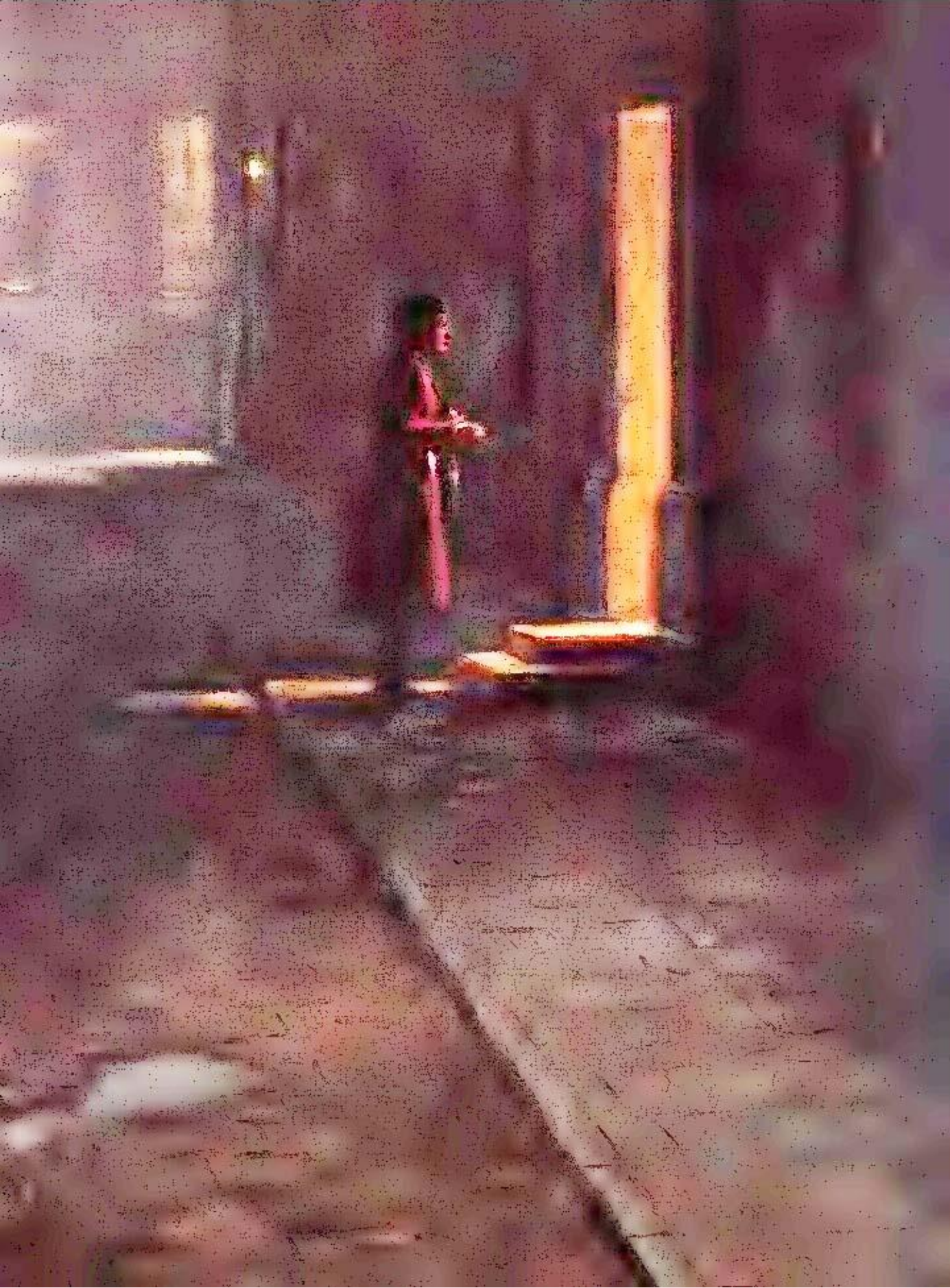
दिसंबर 1942 तक इरेना काउंसिल फॉर ऐड टू ज्यूज़ में शामिल हो गईं, जो एक नवगठित अंडरग्राउंड संगठन था जिसका कोड नाम ज़ेगोटा था. इरेना एक गुप्त पते पर उस संगठन के नेता से मिलीं और उन्होंने नेता से कहा कि "हम मिलकर बहुत अच्छा काम कर सकते हैं क्योंकि मेरे पास भरोसेमंद दोस्तों का नेटवर्क है और आपके पास पैसा है," उन्होंने याद किया. "बाद में संगठन के नेता ने मुझे यहूदी बच्चों के सहायता विभाग की कमान सौंप दी."

इरेना का कोड नाम "सिस्टर जोलांटा" था. वो बमुश्किल 4 फीट 11 इंच लंबी थीं. उन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर खुद को एक नर्स के रूप में पेश किया और यहूदी बस्ती में प्रवेश करने के लिए एक जाली मेडिकल पास का इस्तेमाल किया. इरेना ने यहूदी बच्चों की तस्करी के लिए सरल तरीकों की योजना बनाई, "सद्भावना पर्याप्त नहीं थी," माइकल ग्लोविंस्की जो बचाए गए बच्चों में से थे, ने कहा. ''कार्य को व्यवस्थित तरीके से करना था, और हर कार्रवाई पर अच्छी तरह से विचार करना था.''

इरेना का पसंदीदा भागने का रास्ता पुराने कोर्टहाउस से होकर जाता था, जिसका सामने का भाग यहूदी बस्ती की ओर था और जिसके पीछे का प्रवेश द्वार गैर-यहूदी इलाके की ओर था. "कुछ निकास द्वार खुले थे," इरेना ने कहा, "और एक बहादुर संरक्षक की मदद से, वहां से ध्यान आकर्षित किए बिना निकलना संभव था." नाज़ी गार्डों को जिन बच्चों के यहूदी होने का शक हुआ उन्होंने उन बच्चों को भगवान की प्रार्थना सुनाने को कहा. इसलिए पलायन से पहले, इरेना ने बच्चों को क्रॉस का चिह्न बनाने के साथ-साथ बुनियादी रोमन कैथोलिक प्रार्थनाएं भी सिखाईं.

एक अन्य योजना में किशोरों को "कार्य ब्रिगेड" के साथ भागना होता था. ब्रिगेड में वे कुशल युवा शामिल थे जिनसे जर्मन, गैर-यहूदी इलाकों की वर्कशॉप्स में काम करवाते थे. हर सुबह यह ब्रिगेड यहूदी बस्ती में एक असेंबली पॉइंट से निकलती थी, और फिर रात में उन लोगों को छोड़कर वापस लौटती थी जो भाग गए थे.
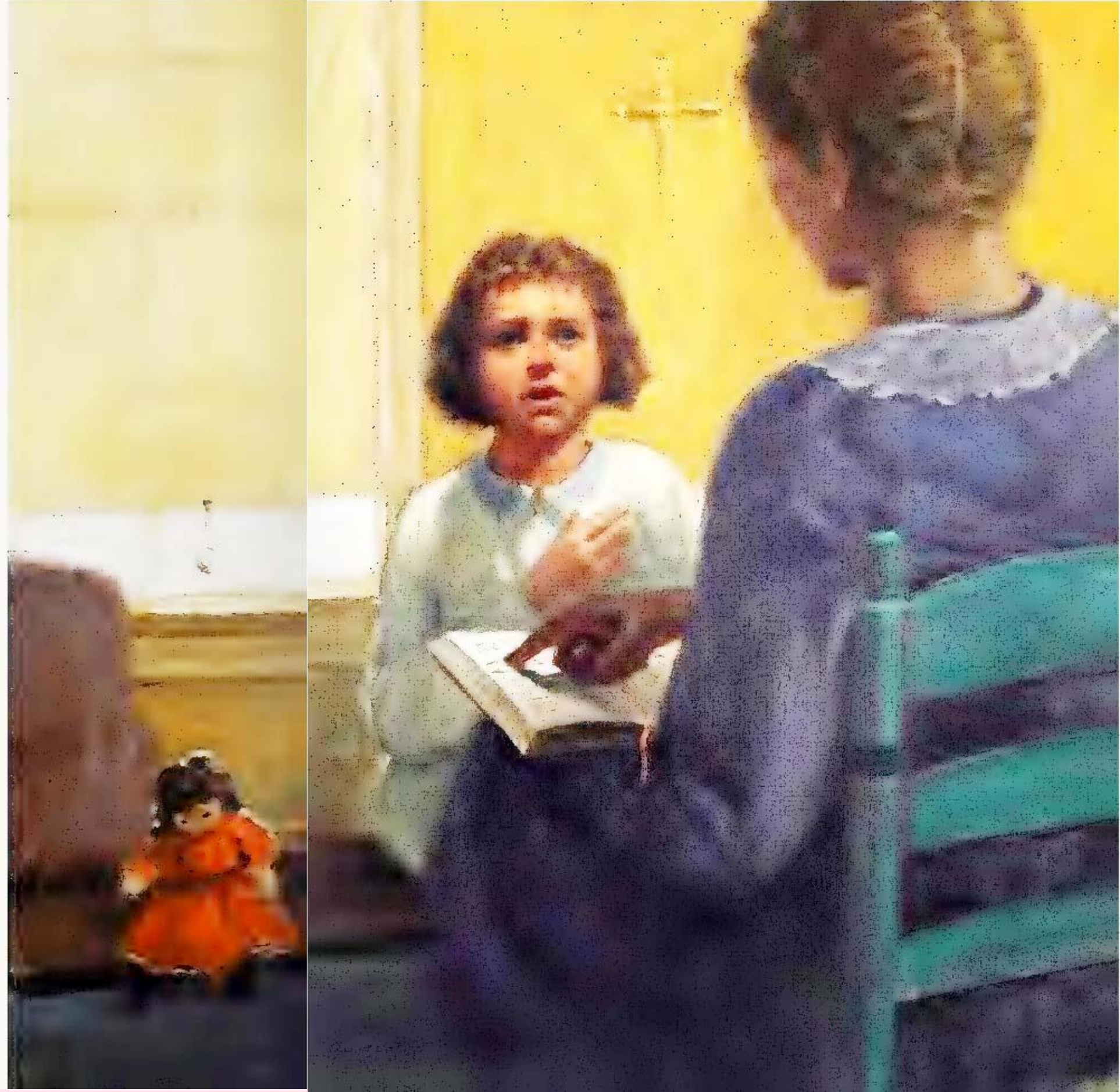
कई बच्चे सीवर यानि नालों के रास्ते भागे. ये ऑपरेशन बिल्कुल सही समय पर किये जाते थे. "मैं और मेरा चचेरा भाई, जो मुझसे थोड़ा छोटा था, अपने घर के गेट पर खड़े थे और भागने के लिए तैयार थे," पियोत्र ज़ेटिंगर ने याद किया, जो उस समय छह साल का था. "वहां पहले से ही अंधेरा था, सड़क सुनसान थी, और सन्नाटे में केवल मार्च करते सैनिक के जूतों की गूँज ही सुनाई देती थी." किसी ने पियोत्र से कहा कि जैसे ही सैनिक गेट पार करके तीस कदम आगे बढ़ें, वो तुरंत सड़क के बीच में बने गड्ढे की ओर भागे.

"मैंने उनके कदम गिने," पियोत्र ने कहा, "क्योंकि अचानक मैंने किसी को फुसफुसाते हुए सुना, 'भागो!' और मुझे अपने कंधे पर एक हाथ महसूस हुआ, शायद मेरी माँ का या मेरे पिता का. वे हमेशा के लिए मुझ से अलविदा कह रहे थे."

पियोत्र और उसका चचेरा भाई तेजी से सड़क के बीच में पहुंचे, जहां एक मैनहोल का ढक्कन खुला था. "वहां एक और हाथ मेरा इंतज़ार कर रहा था," पियोत्र ने कहा. "किसी ने मुझे अंदर खींच लिया. 'यहाँ आवाज़ की अनुमति नहीं है,' अजनबी ने कहा. 'तुम बात नहीं कर सकते हो और खांस भी नहीं सकते हो.'

"हम उस आदमी के पीछे-पीछे चले, हालांकि हम उसे देख नहीं पाए," पियोत्र ने कहा. "उसके पास एक टॉर्च थी और वो समय-समय पर उसे जलाता था."

कभी-कभी इरेना बच्चों को, एम्बुलेंस में स्ट्रेचर और फ़्लोरबोर्ड के नीचे छिपा देती थी. भरोसेमंद ड्राइवर, एंटनी डेम्ब्रोव्स्की ने आगे की सीट पर एक कुत्ता रखा था. जैसे ही एम्बुलेंस नाज़ी गार्डों के पास से गुज़रती, इरेना कुत्ते के पंजे को मारती ताकि कुत्ता भौंके और उससे बच्चों द्वारा किया जाने वाला शोर दब जाए.

अन्य बच्चों को दमकल गाड़ियों में छिपाया जाता था. इरेना ने कहा, "सभी बच्चों को बोरियों से ढंकना पड़ता था, उनके सिर अदृश्य होते थे. आमतौर पर, इरेना छोटे बच्चों को नींद की गोली खिला देती थी या उनके मुंह पर टेप लगा देती थी ताकि वे रोएं नहीं. उन्होंने कुछ बच्चों को बॉडी बैग और ताबूतों में भी रखा, और फिर इरेना और एक ड्राइवर उन्हें दीवार के दूसरी ओर यहूदी कब्रिस्तान में ले जाते थे. यदि कोई गार्ड, ट्रक को रोकता, तो इरेना दावा करती कि वो शवों को दफनाने जा रही थी.
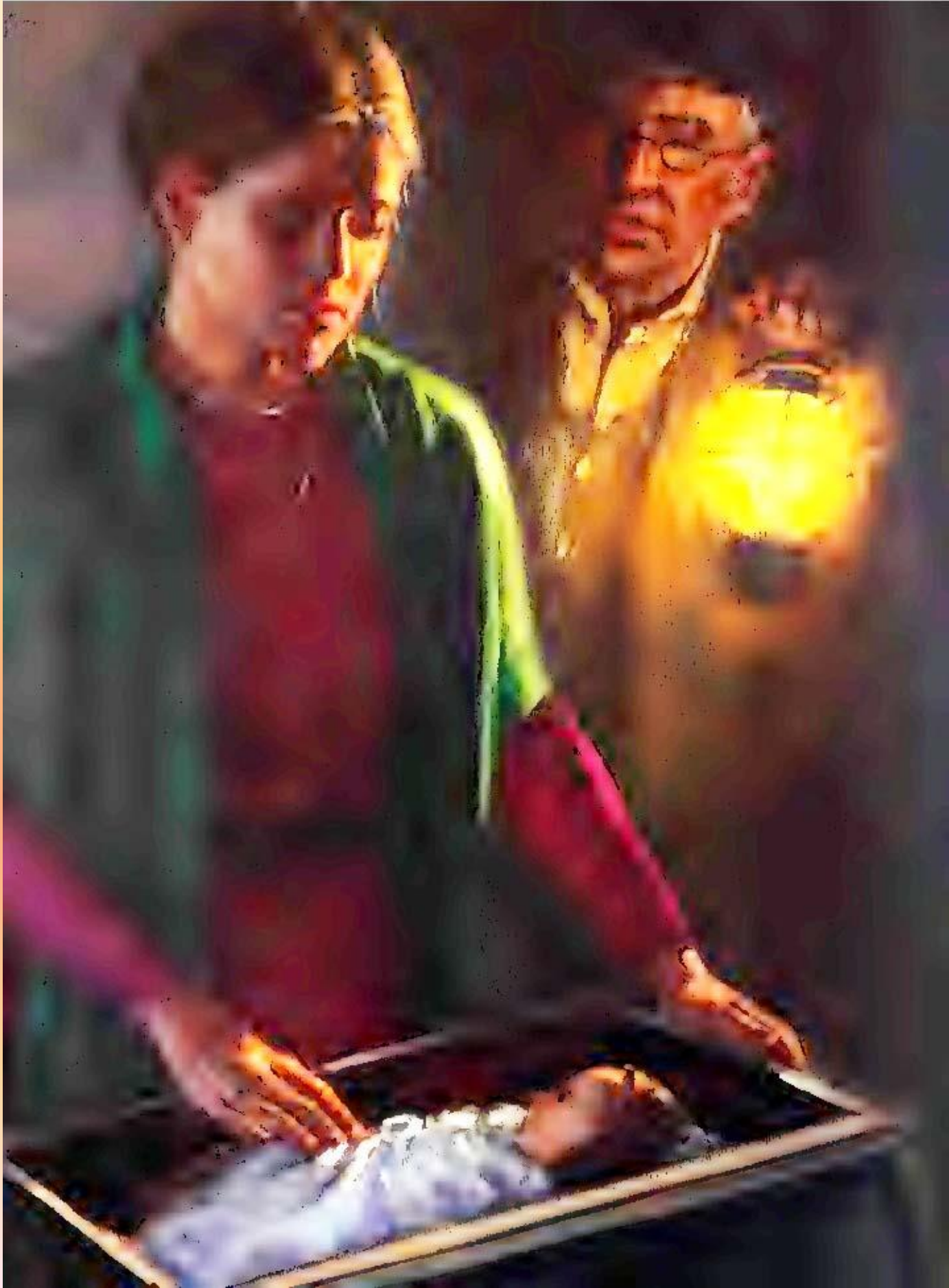
इरेना ने आलू की बोरियों, सूटकेस और टूलबॉक्स में बंद करके बच्चों की तस्करी करने का भी साहस किया.

जब एल्ज़बीटा फ़िकोव्स्का छह महीने की थी, तब उसके माता-पिता ने अपनी बच्ची को इरेना को सौंप दिया था. इरेना ने एल्ज़बीटा को नशीली दवा दी और फिर उसे एक बढ़ई के लकड़ी के बक्से में छिपा दिया. बच्ची के माता-पिता ने एक चांदी के चम्मच में एक तरफ एल्ज़बीटा का पहला नाम और दूसरी तरफ उसकी जन्मतिथि अंकित की थी. ऐसा कहा जाता है कि एक बढ़ई उस बक्से को नाज़ी गार्डों के ठीक सामने से ले गया. बचाव के एक अन्य वृतांत के अनुसार, इरेना ने बढ़ई के बक्से को ईंटों से भरे ट्रक पर रख दिया, ईंटों की व्यवस्था इस तरह की गई ताकि शिशु तक हवा पहुंच सके. "यह मेरी माँ के लिए वास्तव में एक वीरतापूर्ण कार्य था कि उन्होंने अपनी छह महीने की बच्ची को बिना किसी गारंटी के, कि वो जीवित रहेगी या नहीं, इरेना को सौंप दिया था," एल्ज़बीटा ने कई वर्षों बाद कहा.

माता-पिता को मनाना और दादा-दादी के लिए अपने बच्चों को छोड़ना अक्सर बहुत कठिन होता था. अगर कोई माँ हाँ कह भी दे, तो भी पिता ना कह देता था.

"सभी माता-पिता मुझसे सिर्फ एक सवाल पूछते थे : क्या आप गारंटी देती हैं कि मेरा बच्चा जीवित रहेगा?" इरेना ने याद किया. "हमें ईमानदारी से स्वीकार करना पड़ा कि हम ऐसी गारंटी नहीं दे सकते थे क्योंकि हमें यह तक नहीं पता था कि हम उस दिन यहूदी बस्ती छोड़ने में सफल होंगे, या नहीं. एकमात्र गारंटी यह थी कि अगर बच्चे बस्ती में ही रहते तो वे संभवतः मर जाते."

एक बार जब बच्चे बस्ती से बाहर आ जाते तब भी इरेना को उन्हें छुपाना पड़ता था. इरेना और उसके कुरियर बच्चों को एक सुरक्षित घर से दूसरे सुरक्षित घर ले जाते थे. अक्सर पहला पड़ाव इरेना का अपना अपार्टमेंट होता था. वर्षों बाद, जिन पुरुषों और महिलाओं को इरेना ने बचाया था, उन्होंने याद किया कि जब वे यहूदी बस्ती छोड़ रहे थे और यहां तक कि उसके घर में रह रहे थे, तो इरेना ने उनका हाथ पकड़ा था और साथ दिया था.

उन्होंने कहा, "अब बच्चों में अपने परिवेश में होने वाले बड़े बदलावों की आदत पड़ गई थी."

"बच्चे अब अपने प्रियजनों से बहुत दूर थे. अधिकतर बच्चे केवल यहूदी भाषा ही जानते थे. बच्चों को पोलिश बोलना सीखना था और पोलिश गाने, कविताएँ और प्रार्थनाएँ सुनानी थीं ताकि उन्हें कहीं गैर-यहूदी इलाके में आश्रय मिल सके. वे पोलिश बच्चों की तरह दिखते और बोलते तो वो संभव होता."

पियोत्र ज़ेटिंगर, वो लड़का था जो सीवर में से होकर बच निकला था, ने कहा, "मुझे इतनी जल्दी बहुत कुछ सीखना पड़ा." इरेना ने पियोत्र और अधिकांश बच्चों को रोमन कैथोलिक कॉन्वेंट और अनाथालयों में रखा. पियोत्र को पोलैंड के मीड्ज़ल्स में एक कैथोलिक अनाथालय में रखा गया. इरेना ने कहा, "मुझे पता था कि मैं कैथोलिक बहनों पर भरोसा कर सकती थी."

"किसी ने कभी भी मुझसे बच्चा लेने से इनकार नहीं किया."

इरेना ने बचाए गए कुछ बच्चों को पोलिश पालक माता-पिता के पास भी रखा. "निजी घर केवल बहुत छोटे बच्चों को रखने को तैयार थे," इरेना ने कहा. "इन प्यारे घरों में बच्चों को सबसे कम कष्ट सहना पड़ता था." इरेना, बेबी एल्ज़बीटा को पोलिश कैथोलिक दाई के पास ले गई, जिसने बच्चे को गोद ले लिया और एक कैथोलिक के रूप में उसका पालन-पोषण किया.

कई बार, बच्चों को बार-बार स्थानांतरित करना पड़ता था क्योंकि कुछ ब्लैकमेलर्स, नकद इनाम पाने के लिए यहूदी बच्चों को गेस्टापो को सौंपने की धमकी देते थे. उन्हें शक था कि वे बच्चे यहूदी थे. इरेना ने कहा, "यह उन भागे हुए बच्चे के लिए दुखद था. एक बार मैंने एक बच्चे को उठाया जिसे किसी अन्य छिपने की जगह पर जाने की जरूरत थी, और वो बच्चा लगातार रो रहा था. गहरी सिसकियों के बीच उसने मुझसे पूछा, "क्या आप कृपया मुझे बता सकती हैं कि एक बच्चे की कितनी माँ हो सकती हैं? मैं अब अपनी बत्तीसवीं माँ के पास जा रहा हूँ."

इरेना ने यहूदी बच्चों को पोलिश नाम और झूठे जन्म और बपतिस्मा के प्रमाण पत्र दिए. हावा एस्टर शेटिन, अब टेरेसा तुचोलस्का बन गई. पियोत्र ज़ेटिंगर को अपना पहला नाम रखने की अनुमति थी क्योंकि वो एक सामान्य पोलिश नाम भी था, लेकिन उसे अपना अंतिम नाम या अपनी "यहूदी बस्ती वाले माता-पिता," के बारे में कुछ भी बताने की अनुमति नहीं थी

इरेना ने कहा, "यहूदी बच्चों को जीवित रहने के लिए उन्हें अपनी मां और पिता को त्यागना पड़ा. उन्हें दिन-ब-दिन सिखाया जाता था, 'तुम रेचेल नहीं हो, तुम रोमा हो. तुम लीक नहीं हो, तुम जसेक हो.'"

रेचेल, जिसका नाम बदलकर ज़ोसिया रखा गया, रात में अपने कंबल के नीचे छिप जाती थी और अपनी माँ से बातें करने का नाटक करती थी. "तुमने मुझे जाने क्यों दिया?" वो रोते हुए फुसफुसाती थी. "मैं यहाँ पर क्यों हूँ? मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ, माँ. मैं तुम्हारी छोटी रेचेल हूँ; मैं ज़ोसिया नहीं बनना चाहती हूँ."
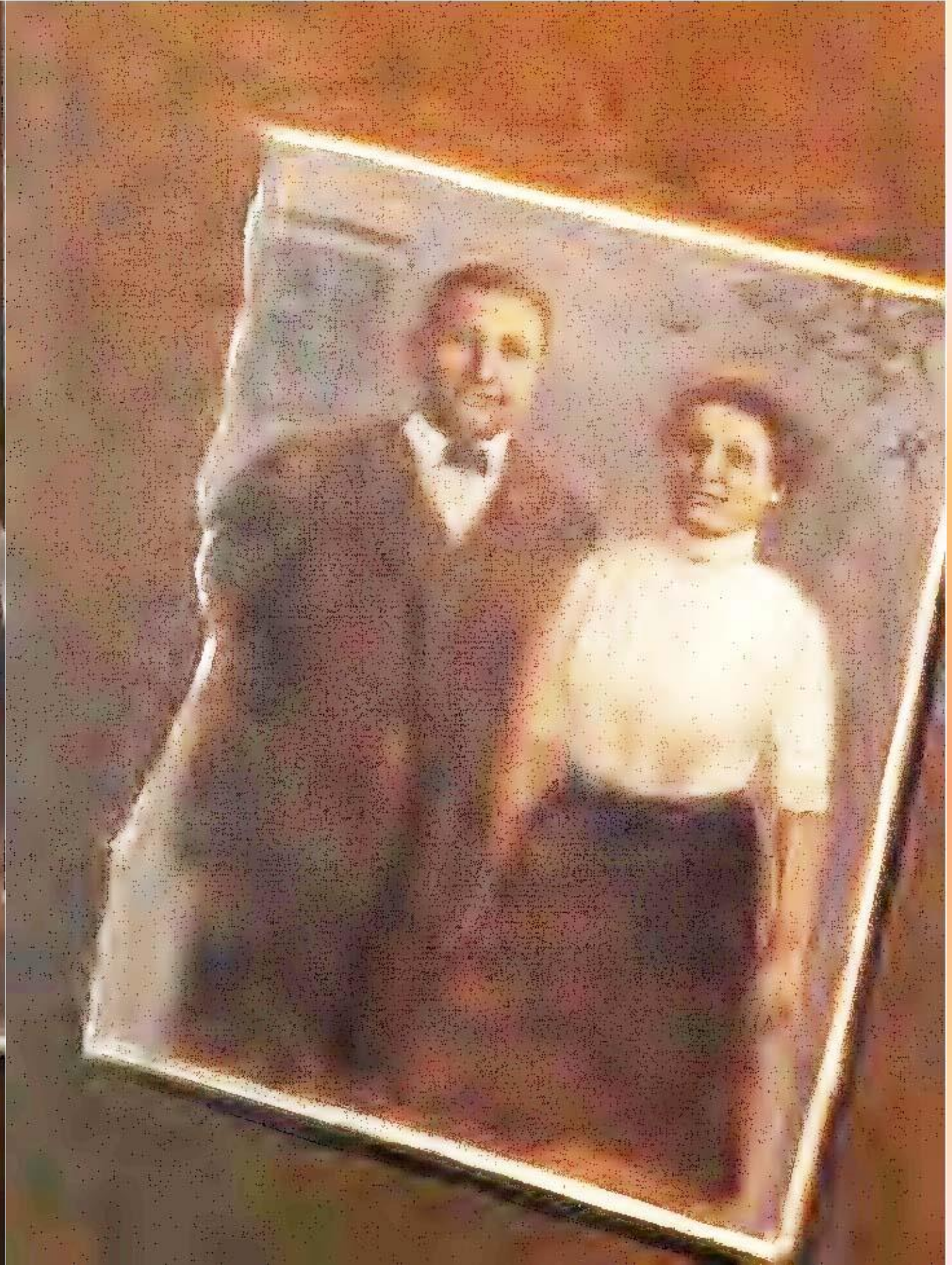
इरेना के लिए कोई भी रिकॉर्ड रखना मुश्किल था? अप्रैल, 1943 में यहूदी लड़ाकों ने यहूदी बस्ती में विद्रोह का आयोजन किया और तब जर्मन सैनिकों ने जवाबी कार्रवाई करते हुए यहूदी बस्ती को लगभग मलबे में तब्दील कर दिया. लेकिन फिर भी इरेना और उसके स्वयंसेवकों ने लोगों को सुरक्षित ठिकानों तक पहुँचाना जारी रखा.

अव्यवस्था के बावजूद इरेना को युद्ध के बाद बच्चों को उनके परिवारों के साथ फिर से मिलवाने की उम्मीद थी, "हमें बच्चों और उनके माता-पिता को याद करने के कोई तरीका इज़ाद करने की ज़रूरत थी," उन्होंने कहा, "हमें अत्यंत गोपनीयता में किसी प्रकार की सूची या इंडेक्स कार्ड बनाने थे." इरेना ने बच्चों के यहूदी नामों को उनके पोलिश नामों के साथ "एक नरम पारदर्शी, संकीर्ण कागज़ की पट्टी पर" लिखा और उन्हें लपेट दिया. उन्होंने कहा, "उस सूची की सुरक्षा के लिए मैं अकेली जिम्मेदार थी. उस समय "अंडरग्राउंड के साथ काम करने वाले किसी भी व्यक्ति को किसी भी समय गिरफ्तार किया जा सकता था. अधिकांश लोग अपनी प्रिय चीज़ों को फ़्लोरबोर्ड के नीचे या फिर स्टोव में छिपाते थे, लेकिन इरेना की कुछ अलग ही योजना थी. "जर्मनों द्वारा अचानक तलाशी लेने की स्थिति में," इरेना ने सोचा, "मैं सूची के छोटे रोल को खिड़की से बाहर बगीचे में एक झाड़ी में फेंक दूंगी." फिर अपनी अच्छी तैयारी के लिए उसने कई बार उसका अभ्यास किया.

20 अक्टूबर, 1943 की शाम को, इरेना की चाची और एक प्रिय मित्र और संदेशवाहक जेनिना ग्राबोस्का उनसे मिलने आईं. यह इरेना के नामकरण वाला दिवस था, इसलिए महिलाएं सुबह लगभग तीन बजे तक बातें करती रहीं.

सामने का दरवाजा पिटने से वे जाग उठे. बाहर गेस्टापो, जर्मन गुप्त पुलिस थी! ट्रेना ने तुरंत नामों के कीमती सूची को खिड़की से बाहर फेंकने की कोशिश की, लेकिन उनके घर को पुलिस ने घेर लिया था. किसी ने गेस्टापो को उनकी अंडरग्राउंड गतिविधियों की जानकारी दी थी. ट्रेना ने कहा, "जर्मन अंदर घुसने की कोशिश कर रहे थे. वे दरवाज़ा तोड़ने ही वाले थे." मैंने सूची अपने कूरियर वाले दोस्त के पास फेंक दी और फिर मैं दरवाज़ा खोलने चली गई.'' ग्यारह गेस्टापो के अफसर अचानक अंदर आ गए. इरेना ने कहा, "उन्होंने फर्श के तख्तों को उठाया और तकियों को फाड़कर देखा. वो भयावह खोज दो घंटे तक चलती रही. इस पूरे समय में मैंने (जेनिना) कूरियर की ओर देखा तक नहीं, ताकि हमारे भयभीत चेहरे किसी भी तरह का संकेत न दें." उसे नामों की अमूल्य सूची को सुरक्षित रखना था. इरेना ने कहा, "वास्तव में, कूरियर की स्पष्ट सोच और उसकी बहादुरी ने सूची को बचा लिया. उसने सूची को अपने अंडरवियर में छिपा लिया था."

गेस्टापो ने इरेना को कपड़े पहनने का आदेश दिया. उन्होंने कहा, "मुझे बहुत खुशी महसूस हुई और मैं शुक्रगुजार हूं कि उन्हें सूची नहीं मिली." इरेना अपनी चप्पलों में ही घर से बाहर निकलीं और एक बाहर इंतजार कर रही कार में जाकर बैठ गईं. उन्होंने कहा, "आगे क्या होगा यह सोचकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा.''
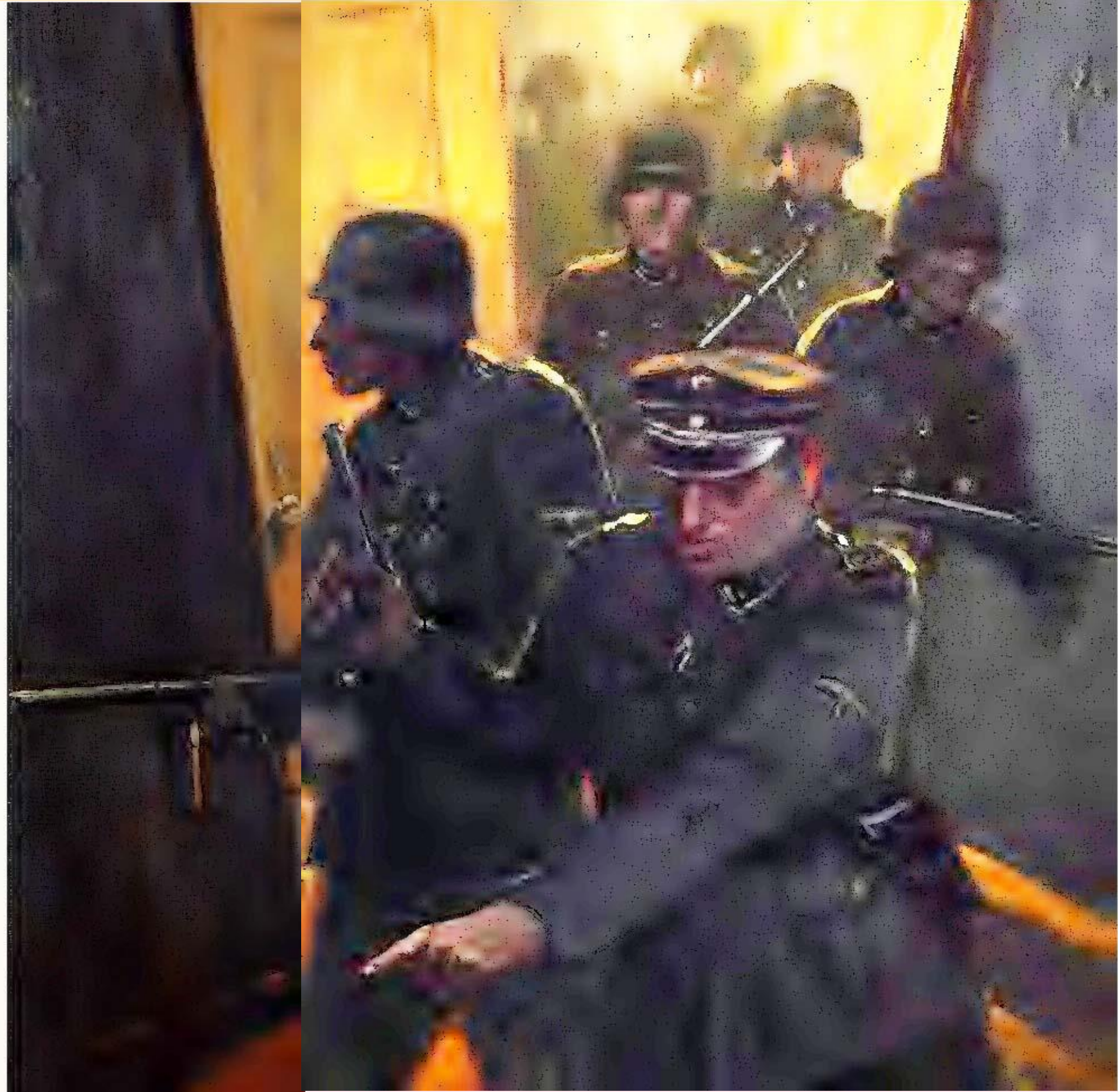
गेस्टापो इरेना को पावियाक जेल ले गए. वहां वो अपने कई भरोसेमंद दोस्तों से भी मिलीं, जिन्हें भी गिरफ्तार किया गया था. इरेना को इस बात का भी एहसास हुआ कि उनका गुप्त मिलन स्थल, एक लॉन्ड्री, खोज ली गई थी.

गेस्टापो ने ट्रेना से यहूदियों की मदद करने वाले अंडरग्राउंड संगठन, उसके नेता और सदस्यों के बारे में पूछताछ की. "गेस्टापो ने मुझसे वादा किया कि अगर मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया, तो फिर वे मुझे तुरंत रिहा कर देंगे," इरेना ने कहा. "लेकिन मैं एक चूहे की तरह शांत रही." कई दिनों तक उन्होंने उससे पूछताछ की और उसे प्रताड़ित किया. एक क्रूर सत्र में गेस्टापो ने इरेना के पैर और टांगें तोड़ डालीं. वो बेहोश हो गई. जब वो होश में आई, तब भी उसने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया. "तीन महीने के बाद मुझे फायरिंग दस्ते द्वारा मौत की सजा सुनाई गई."

ज़ेगोटा नेताओं को नहीं पता था कि इरेना के कूरियर ने नामों की सूची छिपा दी थी. इरेना ने कहा, ''मैंने अपने पत्रों में उन्हें केवल यही बताया था कि गेस्टापो को बच्चों के नामों की सूची नहीं मिली थी. ज़ेगोटा को पता था कि युद्ध के बाद बच्चों को खोजने के लिए कार्ड-इंडेक्स ही एकमात्र उम्मीद थी."

जिस रात इरेना को फाँसी दी जानी थी, "गेस्टापो का ट्रक ड्राइवर, जो गोली मारने के लिए कैदियों से भरे ट्रक को चला रहा था उसने, उसने मुझे जाने दिया," इरेना ने कहा. ड्राइवर को "एक पोल ने भारी रिश्वत खिलाई थी. वो पोल, जर्मनों के साथ काम करता था." ज़ेगोटा में वो रिश्वत, इरेना के दोस्तों ने दी थी. इसलिए ना रोज़ड्रोज़ू स्क्वायर पर ड्राइवर चिल्लाया, "भागो!"

इरेना लड़खड़ाते हुए वहां से कुछ दूर चली गई. गेस्टापो दस्तावेज़ में कहा गया कि उसे गोली मार दी गई थी, और नाज़ियों का मानना था कि वो मर चुकी थी. दो महीने बाद, गेस्टापो को पता चला कि इरेना छिपी थी और अब भी जीवित थी. "उसके बाद गेस्टापो फिर से मेरे पीछे पड़ गई," इरेना ने कहा. फिर इरेना ने अपनी बीमार मां को उनके वारसॉ अपार्टमेंट से चुपचाप बाहर निकाला, और फिर वे दोनों "अजनबियों" के साथ रहने चली गयीं. कुछ ही समय बाद, इरेना की मां की मृत्यु हो गई. इरेना ने अंतिम संस्कार में जाने का जोखिम नहीं उठाया, क्योंकि वो जानती थी कि गेस्टापो वहां उसकी तलाश में तैनात होगी, और इरेना बिल्कुल सही थी.

कुछ समय के लिए इरेना एक सुरक्षित घर में रही जहाँ पहले वो कई यहूदी बच्चों और वयस्कों को लेकर गई थी और वो स्थान था वारसॉ का चिड़ियाघर. युद्ध के शुरुआती दिनों के दौरान चिड़ियाघर पर बमबारी हुई थी जिससे चिड़ियाघर के मालिकों ने कुछ जानवरों को मुक्त कर दिया था. साहसी ईसाई प्राणी-पालकों ने यहूदियों को जानवरों के खाली पिंजरों में छिपा दिया था. अब इरेना उनके पसंदीदा "मेहमानों" में से एक थी.

अपने विभिन्न ठिकानों से, इरेना ने ज़ेगोटा के लिए काम करना जारी रखा. उसने अपना हुलिया पूरी तरह बदल लिया और अब उसके पास अलग नाम का पहचान पत्र था. अंडरग्राउंड सूत्रों से उसे पता चला कि पोलिश होम-आर्मी जर्मनों के खिलाफ विद्रोह करने की तैयारी कर रही थी. विद्रोह शुरू होने से कुछ दिन पहले, इरेना ने "चमत्कारिक रूप से बचाई गई बच्चों की सूची को, दो बोतलों में डाला और सूची को अपने एक अन्य कूरियर, जडविगा पियोत्रोव्स्का के बगीचे में एक सेब के पेड़ के नीचे दबा दिया." जडविगा, नाजी मुख्यालय के ठीक सामने वाली सड़क पर रहती थी. जोखिम के बावजूद, जाडविगा ने वादा किया कि "अगर इरेना की मृत्यु हुई, तो वो नामों की सूची को इकठ्ठा करके उन्हें सही व्यक्तियों तक पहुंचा देगी."

1 अगस्त, 1944 को वारसॉ विद्रोह छिड़ गया. बच्चों, महिलाओं और यहूदी स्वयंसेवकों ने युवा पोलिश सैनिकों के साथ लड़ाई लड़ी. तोपखाने के गोले चटकने लगे. हथगोले फूटे. जर्मनों ने एक के बाद एक इमारतों पर बमबारी की और उनमें आग लगा दी, जिससे अंदर मौजूद सभी लोग मारे गए. पोलिश सैनिकों को उम्मीद थी कि सोवियत सेना मदद के लिए आएगी, लेकिन सोवियत कभी नहीं आए.
2 अक्टूबर तक जर्मनों ने विद्रोह को कुचल दिया था और पोलिश सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया था. सैकड़ों-हजारों लोग मारे गए, और लगभग पूरा वारसॉ नष्ट हो गया. हालाँकि, इरेना बच गई और उसके कीमती मर्तबान, सेब के पेड़ के नीचे सुरक्षित रहे.
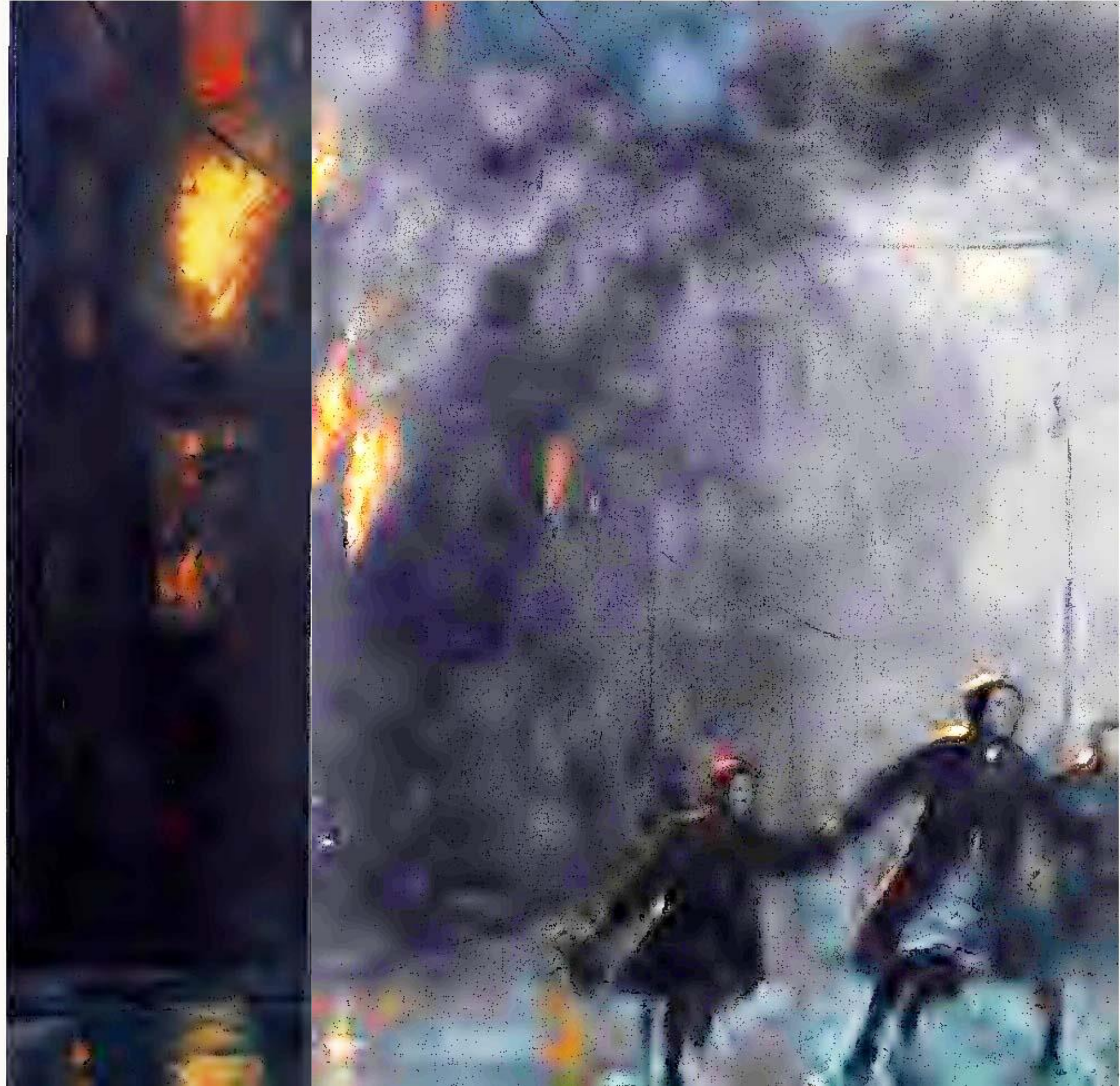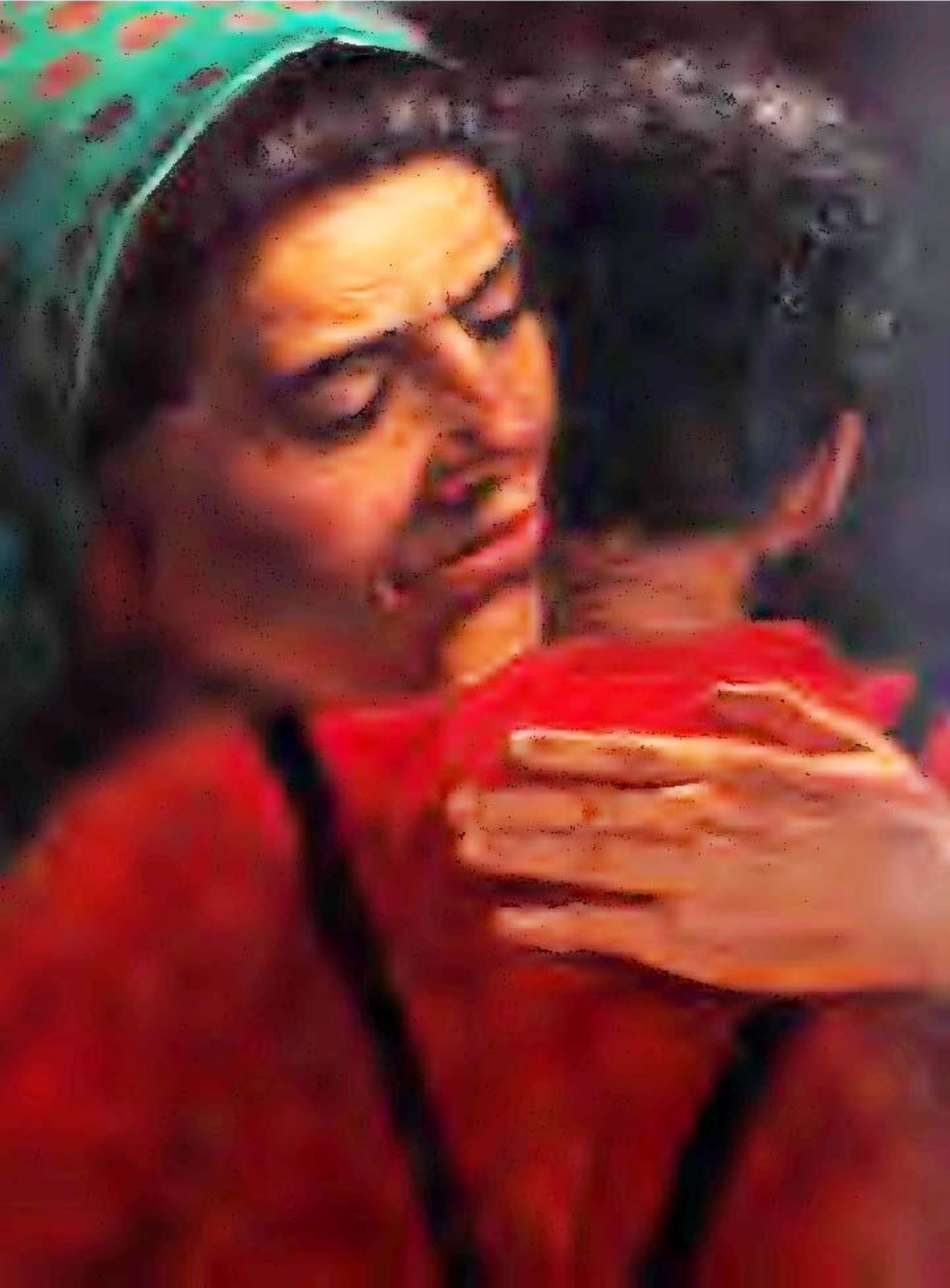
17 जनवरी, 1945 को सोवियत सैनिकों ने अंततः वारसॉ को मुक्त कराया. जर्मन कब्जे के साढ़े पाँच वर्षों में, इरेना ने लगभग चार सौ बच्चों को बचाया था; और उनके नेतृत्व में ज़ेगोटा ने लगभग दो हज़ार बच्चों को बचाया था. पक्की संख्या अभी भी अनिश्चित है. "युद्ध समाप्त होने के बाद, पोलैंड में," इरेना ने कहा, "मैंने यहूदी समिति के प्रमुख डॉ. एडोल्फ हरमन को, सभी बच्चों के नाम वाले इंडेक्स-कार्ड सौंप दिए." वो ज़ेगोटा के सदस्य थे, "इंडेक्स-कार्ड की मदद से," इरेना ने कहा, "यहूदी समिति ने पाए गए बच्चों को अनाथालयों में रखा या फिर उन्हें फिलिस्तीन जाने में मदद की." (जो 1948 में इज़राइल बन गया).

बहुत से बच्चों को बड़े होते हुए यह पता नहीं था कि वे यहूदी थे. उनके अधिकांश माता-पिता और दादा-दादी मारे गए थे. हालाँकि, इंडेक्स-कार्ड की जानकारी ने कुछ बच्चों को उनके परिवारों से फिर से मिलवाया. पियोत्र ज़ेटिंगर की माँ उसे लेने के लिए मठ के अनाथालय में आईं. माँ को देखे हुए पियोत्र को तीन साल हो गए थे, और वो अपनी माँ को पहचान नहीं पाया. पियोत्र ने कहा, "उस महिला ने एक गंदा सिलेटी सर्दी का कोट पहना था जो उसके लिए बहुत बड़ा था, उसका चेहरा बूढ़ा था,... और उसके बाल बिखरे हुए थे और उनमें कुछ बाल सफ़ेद थे." लेकिन पियोत्र अपनी माँ से साथ चला गया. अब वो अजनबियों के साथ एक जगह से दूसरी जगह जाने का अभ्यस्त हो गया था. वे बर्फीली सड़कों पर चलते हुए एक स्टेशन तक पहुंचे, जहां एक लोकोमोटिव आया. एक आदमी ने पियोत्र को ट्रेन में खींच लिया. जैसे ही ट्रेन चलने लगी, पियोत्र के साथ वाली महिला पीछे छूट गई. वो बदहवासी की हालत में प्लेटफार्म पर ट्रेन के साथ भागी. उन्होंने अपना हाथ हिलाया और वो चिल्लाई. ट्रेन धीमी होकर रुकी और फिर महिला उसमें चढ़ गई. पियोत्र ने कहा, "फिर वो महिला आगे बढ़ी, मेरे करीब आई, उसने मुझे गले लगाया, मुझे कसकर पकड़ा और फिर से रोने लगी. समय के साथ मैं पूरी तरह से समझ गया कि वैसा क्यों हुआ. मैं अपनी मां से मिल रहा था."

एक बार जब इरेना से पूछा गया कि क्या उसने धार्मिक कारणों से यहूदी बच्चों को बचाया था, तो उन्होंने कहा, "नहीं, मेरे दिल ने मुझसे ऐसा करने को कहा था."

अंत के शब्द

युद्ध के बाद इरेना की कहानी अनकही रह गई. रूस ने पोलैंड पर कब्ज़ा कर लिया और वहां पर साम्यवादी सरकार की स्थापना की. कम्युनिस्ट, इरेना को गद्दार मानते थे क्योंकि उसने अंडरग्राउंड के साथ काम किया था, जिसे निर्वासित कम्युनिस्ट विरोधी पोलिश सरकार का समर्थन प्राप्त था. पोलैंड में फिर से यहूदी विरोधी भावना फैल गई और यहूदियों को बचाने के लिए इरेना को सताया गया. लेकिन इरेना ने चुपचाप वारसॉ में एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपना करियर फिर से शुरू किया और उसने जो बचाव कार्य किए थे उसके बारे में उसने किसी से कुछ नहीं कहा.

लेकिन जिन बच्चों को उसने बचाया था वे उसे हमेशा याद करते थे और उसके बारे में बातें करते थे. टेरेसा टुचोलस्का कोर्नर (पूर्व में हया एस्टर शेटिन) ने कहा, "युद्ध के बाद इरेना ने मुझे खोजा, और पहले कुछ वर्षों तक मैं उनके घर में रही जब तक कि मैंने मिडल स्कूल पूरा नहीं कर लिया." इरेना ने टेरेसा को फिर से उसकी "यहूदी जड़ों" को खोजने में मदद की और बाद में टेरेसा इज़राइल चली गई.

पियोत्र ज़ेटिंगर अपनी माँ के साथ वारसॉ वापस चला गया और वहां उसने विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग की पढ़ाई की. उसने कहा, "मैं अक्सर मिसेज सेंडलर से मिलने जाता था. वो काफी नजदीक रहती थीं. जहाँ तक उनकी बात है, इरेना सेंडलर मेरी दैवीय परी थीं."

एल्ज़बीटा फ़िकोव्स्का, वो बच्ची थी जिसे बढ़ई के बक्से में छिपाकर बाहर निकाला गया था. वो अपनी दत्तक पोलिश मां के साथ बड़ी हुई, फिर उसने शादी की और उसका अपना परिवार हुआ. इरेना उसकी बेटी की "पालक दादी" बनीं. एल्ज़बीटा ने कहा, "मिसेज़ सेंडलर ने न केवल हमें बचाया बल्कि हमारे बच्चों और पोते-पोतियों और आने वाली पीढ़ियों को भी बचाया."

इरेना की कहानी आखिरकार 1989 में सामने आई जब पोलैंड में कम्युनिस्ट शासन का पतन हुआ और फिर पोलैंड एक लोकतांत्रिक गणराज्य बना. उसके बाद इरेना को पुरस्कार, सम्मान और दुनिया भर का ध्यान मिला. फिर भी इरेना ने कहा, "मेरे मन में हमेशा यही मलाल रहता है कि मैं और अधिक नहीं कर पाई. वो पछतावा मेरी मृत्यु तक मेरा पीछा करेगा."

हीरो के रूप में सराहना किए जाने पर उन्होंने कहा, "हीरो वो होता है जो असाधारण काम करता है. मैंने जो किया वो असाधारण नहीं था, वो एक सामान्य बात थी."

"असली हीरो यहूदी बच्चे और उनकी माताएँ थीं, जिन्होंने अपने सबसे प्रिय बच्चों को मेरे जैसे अज्ञात व्यक्ति को सौंप दिया."